प्रश्न 10. 'अभावक जिनगी ' कविताक भावार्थ लिखू ।

उतर - *कवि अभावक जिनगीक प्रत्यक्ष गवाह बनलाह अछि । रचनाक स्थान ' देवघर ' अछि । जतय वस्तुत: अभावक दर्शन प्रत्यक्ष होइत अछि । आदिवासी बहुल इलाका , भिखक बल पर दिन खेपैत लोकक बीच रचना कैलनि । यथा -*

अभावक जिनगीयो कोनो जिनगी छइ ?

जिबितहि मरबाक अभ्यास लागि जाइ छइ।

समस्त आकांक्ष-अभिलाषा भस्मीभूत भ जाइ छइ।

विषमताक अग्निमे जरि क ।

अभावक जिनगीक प्रभाव वस्तुत: मरने के समान होइत छैक । अभावमे लोक नित मरइ अछि यैह वास्त्विकता अछि । जखन अभावमे अछि तखन आकांक्षा आ अभिलाषा त' स्वत: समाप्त भ जाइत छैक । ओ एक दिस अपन अभाव कँ देखैत अछि आ दोसर दिस सम्पन्नताक विशाल अट्टालिका तखन कोना ओ भस्मीभूत होअ । अभाव मानवीय विषमताक देन थिक । ओना सभकँ पूर्ण अधिकार छै , आवश्यक आवश्यकता पूर्ति करब लेकिन श्रमसँ । देह चोराबैत अछि तखने ओ अभावक जिनगी जीबक लेल

विवश भ’ जाइछ । अभावग्रस्त लोकमे मान - सम्मान कत ’ ? कतहु नहि ।

ओ तखन -

अभावक जिवनकेँ प्रभाव पड़ै अछि त’ अबै अछि , भुखमरीक समयमे सभ बदलि जाइत छै। कखनो किओ ओकर अभावक जिनगीसँ हँसी मजाक करैत छै । कखनो पैंच - उधारक तगेदा त’ सेठ - साहुकार अपन चौअन्नी केँ रूपया मे बदलबा हेतु आतुर रहैत अछि ।